हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय
पत्र संख्या - 08

हिन्दी नाटक में रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास

सर्वप्रथम रंगमंच के स्वरूप पर विचार करनी चाहिए। प्रो० आर० एन० शर्मा के शब्दों में - "रंग मंच, रंगशाला के उस भाग को कहते हैं, जिस पर नाटक का अभिनय किया जाता है।"

'श्राव्य' एवं 'दृश्य' के भेद से काव्य के दो रूप माने गये हैं श्राव्य-काव्य का सम्बन्ध जहाँ श्रवण या पठन से है, वहाँ दृश्य-काव्य का श्रवण एवं अभिनय से है। नाटक दृश्यकाव्य के अन्तर्गत आता है इसलिए उसकी सफलता का प्रमाण 'अभिनेता' है। आचार्य भरत मुनी के अनुसार अभिनय का अर्थ है - सम्मुख ले जाना। डॉ० ओझा का मत है कि हृदय के भावों को प्रकाशित करनेवाली आंगिक चेष्टा ही अभिनय है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि नाटक की सार्थकता अभिनेता में है, फिर भी ऐसे भी नाटक हैं जिनका अभिनय

कष्टसाध्य है, जैसे- प्रसाद के नाटक में है।

रंगमंच की परम्परा:-

आचार्य भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में रंगमंच का विस्तृत उल्लेख किया है। चूँकि लक्ष्य के बाद ही लक्षण का निर्माण किया जाता है। इसलिए यह सिद्ध है कि आचार्य भरत के पहले भी भारत में रंगमंचों की समृद्ध परम्परा रही है।

हिन्दी रंगमंच का विकास:-

हिन्दी रंगमंच का प्रारंभ भारतेन्दु से माना जाता है किन्तु भारतेन्दु-पूर्व युग से भी रंगमंच का अस्तित्व था। जैसा कि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है:- रंगमंच से विहिन कुछ अभिनय बच गये थे। जिन्हें हम पारसी स्टेजों के पहले भी देखते थे इनमें मुख्यतः नौटंकी और भाड़ भी थे।"

हिन्दी रंगमंच:-

पारसी नाटक कंपनियों की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में भारतेन्दु ने लिखा है कि "वाराणसी में पारसी नाटक वालों ने नाच घर में जब 'शकुंतला नाटक खेला

और उसमें धीरोदात्त नायक दुष्यन्त, खेमटेवालियों की तरह कमर पर हाथ रखकर मटक-मटक कर नाचने और 'पतरी कमर बल खाय' यह गाने लगा तो डॉक्टर थीबो, बाबू प्रमदादास मित्र इत्यादि विद्वान यह कहकर उठकर चले गये कि अब देखा नहीं जाता, यह लोग कालिदास के गले पर छुरी फेर रहे हैं।

भारतेन्दु के अनुसार अव्यावसायिक रंगमंच पर हिन्दी का पहला अभिनीत नाटक 'जानकी मंगल' (1868) था। इसी समय कानपुर में भारतेन्दु के नाटकों -वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा आदि का सफलतापूर्वक अभिनय किया गया।

भारतेन्दु के समय देश के अनेक नगरों में अव्यावसायिक रंगमंच की स्थापना की गयी। वाराणसी में ही निम्न रंगमंच थे - नागरी नाटक मंडली, भारतेन्दु नाटक मंडली, काशी नाटक मंडली, कवितावर्द्धिनी सभा बनारस थियेटर आदि।

हिन्दी रंगमंच के विकास में इलाहाबाद का भी महत्वपूर्ण स्थान है सन् 1870 में एक अभिनय मंच आर्य नाटक

समाज की स्थापना की गयी। इस मंच द्वारा 'रणधीर प्रेममोहिनी' नाटक का मंचन हुआ था।

वाराणसी और इलाहाबाद के बाद हिन्दी रंगमंच का तृतीय केन्द्र ~~कानपुर~~ कानपुर था। यहाँ भारतेन्दु के नाटकों का सफलता पूर्वक मंचन किया जाता था। कानपुर के प्रमुख हिन्दी रंगमंच की स्थापना राम नारायण दिपाठी ने की थी। 'भारत मनोरंजिनी सभा' जिसके संस्थापक प्रतापनारायण मिश्र थे।

प्रस्तुतकर्ता
वैनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 8292271041

दिनांक
16/10/2020